



# पी ए यू की नई सरफेस सीडिंग तकनीक से बोई गेहूं बारिश, तेज़ हवाओं से बेअसर

## इस नई तकनीक से धान की कटाई और गेहूं की बुवाई एक ही समय संभव

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के वैज्ञानिकों द्वारा धान की कटाई के बाद गेहूं बोने की एक नई तकनीक विकसित की गई है, जिसके परिणामस्वरूप मार्च के सप्ताह में पंजाब के कई हिस्सों में तेज़ हवाओं और ओलावृष्टि के साथ-साथ भारी बारिश से फ़सल कम प्रभावित हुई है।

जिन किसानों ने पी ए यू द्वारा सुझाई गई सरफेस सीडिंग-कम-मल्लिंग तकनीक को अपनाया था, वे कठोर मौसम की स्थिति से कम प्रभावित हुए। पी ए यू के नए दृष्टिकोण ने गेहूं को खराब मौसम का सामना करने में मदद की, जिसके परिणामस्वरूप फ़सल कम गिरी।

पी ए यू के विशेषज्ञों ने कहा कि सरफेस सीडिंग-कम-मल्लिंग तकनीक से बुवाई कंबाइन हार्वेस्टर की मदद से विशेष रूप से तैयार किए गए अटैचमेंट के साथ की जाती है। उन्होंने कहा इस अटैचमेंट के कंबाइन हार्वेस्टर धान की कटाई और गेहूं की बुवाई दोनों एक साथ कर सकती है जिससे समय और धन की बचत होगी।

पी ए यू के कुलपति सतबीर सिंह गोसल के नेतृत्व में एक टीम ने पंजाब के छह ज़िलों का दौरा किया ताकि सरफेस सीडिंग-कम-मल्लिंग तकनीक से गेहूं की बुवाई के कार्यान्वयन का आकलन किया जा सके। जिन ज़िलों का दौरा किया गया उनमें मोगा, फ़िरोज़पुर, तरन तारन, अमृतसर, कपूरथला और जालंधर शामिल हैं।

हर ज़िले में कृषि विज्ञान केंद्र (के वी के)/कृषि सलाहकार सेवा केंद्र (एफ ए एस सी) के कर्मचारियों के साथ टीम, जिसमें पी ए यू के कृषि विज्ञान विभाग के प्रमुख मकखन सिंह भुल्लर, पीएयू के मृदा विज्ञान विभाग के प्रमुख धनविंदर सिंह और कृषि विज्ञानी जसवीर सिंह गिल शामिल थे, ने खेतों से सूक्ष्म स्तर के अवलोकन एकत्र किए।

यूट्यूबर कुलदीप सिंह शेरगिल और किसानों के एक समूह की फ़सल का बढ़िया प्रदर्शन रहा जहां मल्चर के बजाय धान के पुआल को काटने और फैलाने के लिए कटर-कम-स्प्रेडर का उपयोग किया गया।

पी ए यू टीम ने मोगा ज़िले के सलीना गांव में तरसेम सिंह के खेतों का निरीक्षण किया, जिन्होंने पांच एकड़ पर इस तकनीक को सफलतापूर्वक लागू किया था, जिसके परिणामस्वरूप फ़सल खराब मौसम के कारण गिरी नहीं। पंजाब कृषि विभाग और के वी के, मोगा के अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के अपनाने वाले बाकी किसानों ने भी खराब मौसम की स्थिति में भी इसी तरह के परिणाम देखे।

कई फ़ायदों का हवाला देते हुए, किसानों ने एक से दो सिंचाई की बचत, महंगी मशीनरी के बिना निष्पादन में आसानी, और शाकनाशी के उपयोग में कमी को इस नई तकनीक के प्रमुख आकर्षण बताया।

तरन तारन ज़िले के बुर्ज देवा सिंह गांव के किसान गुरबचन सिंह की 32 एकड़ गेहूं और एक एकड़ गोभी सरसों की फ़सलें, जो सरफेस सीडिंग तकनीक के साथ बोई गई थीं, पेश कीं जो गिरी नहीं, स्वस्थ और खरपतवार से मुक्त थीं।

स्त्रीयां जट्टां (कपूरथला) और बतूरा (जालंधर) गांवों के किसानों के समूह ने भी इस तकनीक के बारे में इसी तरह के अनुभव साझा किए।

अमृतसर के दूलो नांगल गांव के जसपाल सिंह ने कहा कि उनकी बुवाई की लागत शून्य हो गई क्योंकि उन्होंने पारंपरिक विधि की तुलना में 20 किलो कम बीज का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि गेहूं की सतही बिजाई पर प्रति एकड़ 300 से 400 रुपये का खर्च आता है। “मुझे आवास न होने, कम खरपतवार, अधिक उपज और एक-दो सिंचाई पर बचत का अतिरिक्त लाभ मिला। बेमौसम बारिश के बावजूद, सतही बिजाई ने मेरी गेहूं की फसल को बचा लिया। इसके अलावा, मुझे पराली के प्रबंधन की भी कोई समस्या नहीं हुई,” जसपाल ने कहा।

छह ज़िलों के अपने दूसरे दौरे से, पीएयू कुलपति गोसाल ने निष्कर्ष निकाला कि सरफेस सीडिंग-कम-मल्लिचंग तकनीक के साथ बोई गई फसलें कहीं भी गिरी नहीं, उनमें एक सिंचाई बच गई, और मोटी मल्ल के कारण शाकनाशी के छिड़काव में कमी आई।

गोसाल ने कहा कि यह विधि लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ जल-कुशल है, जिससे फ़सल जल्दी निकलती है और कम से कम खरपतवार का प्रकोप होता है।

उन्होंने किसानों से इस आसान रणनीति को अपनाने का आग्रह किया, क्योंकि इस द्वारा पर्यावरण की दृष्टि से धान अवशेषों के सुरक्षित प्रबंधन के अलावा, खेत में अवशेष रखने से मृदा स्वास्थ्य में सुधार और फ़सल उत्पादन में वृद्धि हुई है।